L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART-I
PAPER- II

Dr. PRAMOD KR. SAHU.
Assit-Professor.
Guest-Teacher.
SUB- PSYCHOLOGY
N.S.J. College RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumardbg2018@gmail.com

TOPIC:- सामाजिक आक्रामकता में मनो-सामाजिक कारक,

Q. आक्रामकता क्या है। आक्रामकता को प्रभावित करने वाले कारकों वर्णन करें:-

आक्रामकता वह शारीरिक या मौखिक व्यवहार है जो किसी व्यक्ति को आघात पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है, आक्रामकता वह व्यवहार है जिसका उद्देश्य विशिष्ट व्यक्ति को हानि पहुँचाना है। बैरन और बाइरनी (1994) ने आक्रामकता वह व्यवहार है जिसका उद्देश्य दूसरे जीवित प्राणी या प्राणियों को नुकसान पहुँचाना या चोट पहुँचाना है। जिससे दूसरा प्राणी बचने का प्रयास करता है। इस प्रकार के व्यवहार में आक्रामकता कुछ न कुछ मात्रा में पायी जाती है। मनुष्य के सामाजिक व्यवहार का आक्रामकता एक अविभाज्य अंग है। आक्रामकता एक प्रकार का वह व्यवहार है। जिसका उद्देश्य दूसरों को नुकसान या चोट पहुँचाना होता है। आक्रामकता की अभिव्यक्ति में जब हथियारों का विशेष रूप से खतरनाक हथियारों का उपयोग किया जाता है। तो आक्रामक व्यवहार हिंसा और विध्वंस का रूप धारण कर लेता है। इस दिशा में आक्रामक व्यवहार विनाशकारी हो जाता है। आक्रामकता का यह रूप मानव जाति के लिए एक बहुत बड़ी समस्या और चुनौती है। इसका नियंत्रण हर प्रकार से आवश्यक है।

(Determinants of Aggression)

आक्रामकता को प्रभावित करने वाले कारक:-

(1) वंशानुक्रम और आक्रामकता:- अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि जिन व्यक्तियों में एक से अधिक y- क्रोमोसोम होता है। जिनमें XYY क्रोमोसोम होता है। वह व्यक्ति सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक लम्बे होते हैं। तथा हिंसात्मक व्यवहार करने वाले होते हैं। इस दिशा में कुछ अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है, कि 550 सामान्य व्यक्तियों में इस प्रकार के एक व्यक्ति के होने की संभावना होती है।

Scanned with CamScanner

कुछ अध्ययनों में यह देखा गया है कि कैदियों में यह घटनाक्रम लगभग 15 या 20 गुना होता है। एक अनुसंधानकर्ता का यह भी विचार है कि आक्रामक व्यवहार के लिए अधिक अतिरिक्त Y-क्रोमोसोम ही कारण होता है। अतः कहा जा सकता है कि आक्रामकता का कारण बाहरी वातावरण में न होकर व्यक्ति स्वयं में निहित होता है।

(ii) शारीरिक और वाचिक आक्रमण :- एक व्यक्ति में आक्रामक व्यवहार उस स्थिति में भी उत्पन्न हो सकता है जब दूसरा व्यक्ति उसको शारीरिक या मौखिक रूप से उकसाए या उद्दीपन दे (छेड़-छाड़)। यह देखा गया है कि इस उद्दीपन या छेड़-छाड़ में यदि दोनों में से किसी एक ओर से आक्रामक व्यवहार का आरम्भ हो जाता है, तो यह क्रम पारस्परिकता के साथ चलता रहता है। इस दिशा में कुछ अध्ययनों में यह देखा गया है कि मौखिक या वाचिक छेड़-छाड़ की अपेक्षा शारीरिक छेड़-छाड़ या उद्दीपन आक्रामक व्यवहार को अधिक उत्पन्न करता है। कई अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि आक्रामकता पारस्परिक होती है। दूसरा व्यक्ति जवाबी रूप से आक्रामक व्यवहार करेगा।

(iii) संचार साधन (Communication media) इस दिशा में कुछ प्रयोगात्मक अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा के प्रतिरूपों को जिस प्रकार का आक्रामक व्यवहार करता हुआ एक व्यक्ति देखता है तो वह भी उसी मॉडल के आक्रामक व्यवहार का अनुकरण कर लेता, क्योंकि वे हिंसात्मक व्यवहार पर टेलीविजन प्रभाव के अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि आक्रामक व्यवहार और हिंसा से संबंधित व्यवहार को टेलीविजन पर पुरस्कृत होता हुआ दिखाया जाता है। व्यवहारों से उद्देश्यों या उद्देश्यों की प्राप्ति होते हुए दिखलायी जाती है तो निश्चय ही इस प्रकार का व्यवहार दर्शकों को प्रभावित ही करता है।

(iv) मादक द्रव्यों का प्रभाव (Impact of drugs) :- इस दिशा में कुछ अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जब कुछ उत्तेजक द्रव्यों का सेवन कोई व्यक्ति करता है तब उसकी क्रियाशीलता और शक्ति अस्थायी रूप से मादक द्रव्यों के सेवन के कारण बढ़ जाती है। उस व्यक्ति की संवेगात्मक प्रतिक्रियाशीलता भी बढ़ जाती है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि मादक द्रव्यों के सेवन से व्यक्ति में बाह्य रूप से आक्रामकता के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

(V) सेक्स (Sex) :- इस दिशा में किये गये अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में आक्रामक व्यवहार अधिक मात्रा में पाया जाता है। लेकिन इस प्रकार का लिंग भेद बहुत कुछ व्यक्ति-पुरुषों की संस्कृति और परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है। व्यक्ति का सेक्स उनकी आक्रामकता को प्रभावित करता है या नहीं यह एक अलग बात है लेकिन इतना अवश्य है। कि अधिकांश समाजों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष अधिक आक्रामक व्यवहार करने वाले होते हैं।

(VI) परिस्थिति (Situation) किसी भी प्रकार के व्यक्ति हर समय आक्रामक व्यवहार नहीं करते। आक्रामक व्यवहार बहुधा व्यक्ति किसी परिस्थिति विशेष में ही करता है, यह भी यह देखा गया है कि व्यक्ति उस समय आक्रामक व्यवहार करता है। जब वह देखता है कि इस प्रकार का व्यवहार करने से उसका कार्य बन जायेगा, या उसके उद्देश्यों की पूर्ति हो जायेगी, कभी-कभी वह उस परिस्थिति में भी आक्रामक व्यवहार करता है। जब वह परिस्थिति विशेष में अपने को असुरक्षित अनुभव करता है। और सुरक्षा के अन्य उपाय बेकार हो जाते हैं। तब वह आक्रामक व्यवहार की प्रकृति कर परिस्थिति से निकलना चाहता है।

(VII) तापमान एवं कोलाहल :- इस अध्ययन में यह देखा गया कि जब भौतिक तापमान में वृद्धि होती है तब व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक आक्रामकता से व्यवहार की प्रकृति करता है। वातावरण में तापमान बढ़ने से तनाव में वृद्धि होती है और तनाव से आक्रामकता की उत्पत्ति होती है। मनोवैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि तापमान में वृद्धि से व्यक्ति में पलायन का व्यवहार उत्पन्न होता है। पलायन की उपस्थिति में आक्रामकता उत्पन्न नहीं होती है।

वातावरण में जब कोलाहल का स्तर बढ़ जाता है तब व्यक्ति में आक्रामकता उत्पन्न होती है।

(VIII) कुण्ठा (Frustration) :- आक्रामकता और कुण्ठा से संबंधित जो मनोवैज्ञानिक अध्ययन हुए हैं। उनसे यह स्पष्ट हुआ है कि आक्रामक व्यवहार का एक मुख्य कारण कुण्ठा है। इन अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि हर प्रकार की कुण्ठा से व्यक्ति में आक्रामक व्यवहार उत्पन्न नहीं होता है।

Scanned with CamScanner

कुण्ठा की स्तर जितनी अधिक होता है तब आक्रामक व्यवहार के उत्पन्न होने की सम्भावना अधिक होती है।

(iv) अवैयक्तिकता (Deindividuation) अवैयक्तिकता की भावना जैसे-जैसे बढ़ती है। आक्रामक व्यवहार भी उसी रूप से बढ़ जाता है। इसके और जिन व्यक्तियों में वैयक्तिकता की भावना अधिक होती है उन व्यक्तियों में आक्रामक व्यवहार अपेक्षाकृत कम पाया जाता है तोड़-फोड़ का व्यवहार करते हैं उनमें अवैयक्तिकता की भावना पर्याप्त मात्रा में होती है जिसे आक्रामक व्यवहार करने वाले व्यक्ति को उसके नाम से पुकार कर कहा जाता है। कि वह आप क्या कर रहे हैं। आक्रमणकर्ता संकोच में आ जाता है आक्रमणकर्ता में वैयक्तिकता की भावना आ जाने पर आक्रामकता कम हो जाती है। वैयक्तिकता की भावना होने पर व्यक्ति इस बात से डरता है। कि उसका नकारात्मक मूल्यांकन किया जायेगा, अतः कहा जा सकता है कि अवैयक्तिकता की भावना बढ़ने के साथ-साथ आक्रामक व्यवहार की मात्रा बढ़ती है।

(v) प्रत्यक्ष रूप से उकसाना :- आक्रामकता और हिंसा के क्षेत्र में किये गये अध्ययनों से स्पष्ट है कि जब आक्रामक या हिंसक रूप से व्यवहार करने वाले व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से उकसाया जाता है। या व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से उत्तेजित किया जाता है। तब आक्रामक व्यवहार करने वाला व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक आक्रामक व्यवहार करता है उसे जितनी तीव्रता के साथ उकसाया जाता है। उतनी ही वह तीव्र आक्रामकता हिंसक व्यवहार करता है। आक्रामक व्यवहार करने वाले व्यक्ति को उकसाने के बजाय यदि शान्त करने वाला वातावरण पैदा किया जाय तो उसके आक्रामक व्यवहार में कमी आ जाती है। अथवा आक्रामक व्यवहार समाप्त हो जाता है।

(vi) व्यक्तित्व कारक :- कुछ विशेष व्यक्तित्व विशेषताओं वाले लोग अधिक आक्रामक व्यवहार करते हैं व्यक्ति ऐसी व्यक्तित्व विशेषताओं वाले होते हैं। जो आक्रामक परिस्थितियों में भी अपेक्षाकृत शान्त रहते हैं। नार्थ और उनके साथियों के अनुसार जिन व्यक्तियों में एक अतिरिक्त Y-क्रोमोसोम पाया जाता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date - 24/04/2020

Scanned with CamScanner